DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-9,
DETERMINANTS OF BIOLOGICAL PERSONALITY
LECTURE-44

व्यक्तित्व के जैविक निर्धारक

DETERMINANTS OF BIOLOGICAL PERSONALITY

व्यक्तित्व के जैविक निर्धारको से तात्पर्य वैसे निर्धारकों में होती है जो अनुवांशिक होते है तथा जो जन्म या जन्म के पहले ही व्यक्ति में मौजूद होते है और व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते है ऐसे प्रमुख कारक निम्नांकित है-

(1) शारीरिक संरचना तथा शारीरिक स्वास्थ्य – शारीरिक संरचना से तात्पर्य प्राणी के शरीर के कद , रंग गठन आदि से होते है| जिस व्यक्ति की शारीरिक संरचना सुडौल होती है,उसका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा होता है |व्यक्ति की शारीरिक संरचना से सम्बंधित ये सभी

शीलगुण वंशानुगत होते है |यही कारण है की प्रायः लम्बे माता-पिता के बच्चे लम्बे , नाटे माता-पिता के बच्चे नाटे,गोरे माता-पिता के बच्चे गोर तथा सांवले माता-पिता के बच्चे सांवले होते है |व्यक्तित्व के इन शारीरिक शील-गुणों का प्रभाव मानसिक शीलगुणों के विकास पर भी पड़ता है |प्रायः देखा जाता है की जिन बच्चों या व्यक्तियों का शारीरिक स्वास्थ्य तथा संरचना आकर्षक एवं सुन्दर होता है ,उसके प्रति माता –पिता ,पास-पड़ोस के लोग ,शिक्षक,साथियों एवं अन्य लोगो का व्यवहार काफी अनुकूल होता है |फलस्वरूप,ऐसे बच्चो में अच्छे मानसिक शील गुणों जैसे-श्रेष्ठता-भाव आत्म –विश्वास ,उत्तरदायित्व ,सामाजिकता ,तथा समय निष्ठा आदि का विकास तीव्रता से होता है |दूसरी तरफ जिन बच्चो की शारीरिक संरचना तथा शारीरिक स्वास्थ्य ख़राब तथा विकर्षक होता है,उसके प्रति अधिकतर लोग उपेक्षा की दृष्टी से देखते है |फलस्वरूप ऐसे बच्चो में हीनता का भाव,संवेगात्मक अस्थिरता संकोचशीलता आदि का गुण विकसित हो जाता है |

(2) शारीरिक रासायन एवं अन्तःश्रावी ग्रंथियाँ – प्रायः ऐसा देखा जाता है की कभी-कभी हम लोग बहुत सक्रीय हो

जाते है तथा कभी-कभी बहुत ही निष्क्रिय और साथ ही साथ विषादी भी हो जाते है |इसका कारण यह है की हमारे शरीर में रासायनिक परिवर्तन होते है जिसका नियंत्रण कुछ ग्रंथियों द्वारा की जाती है |मानव शरीर में दो तरह की ग्रंथियाँ वहिःश्रावी ग्रंथि या नलिका ग्रंथि तथा अन्तःश्रावी ग्रंथियाँ या नालिकाहीन ग्रंथियाँ |वहिःश्रावी ग्रंथि का महत्व व्यक्तित्व के निर्धारक के रूप में कुछ भी नहीं है क्योंकि उन ग्रंथियों का श्राव एक विशेष पथ या नलिका होकर शरीर के बाहर चला आता है और उसका प्रभाव व्यक्तियों के विकास पर नहीं पड़ता है |अश्रुग्रंथि तथा लारग्रंथी वहिःश्रावी ग्रंथि का एक अच्छा उदाहरण है|

अंतःश्रावी ग्रंथि का महत्व व्यक्तित्व के निर्धारक के रूप में काफी अधिक है |इससे निकलने वाले श्राव को हारमोंस कहा जाता है जो सीधे खून में मिल जाता है और व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करता है| प्रमुख अन्तःश्रावी ग्रंथियाँ जिसके श्राव से व्यक्तित्व का विकास प्रभावित होता है ,निम्नांकित है –

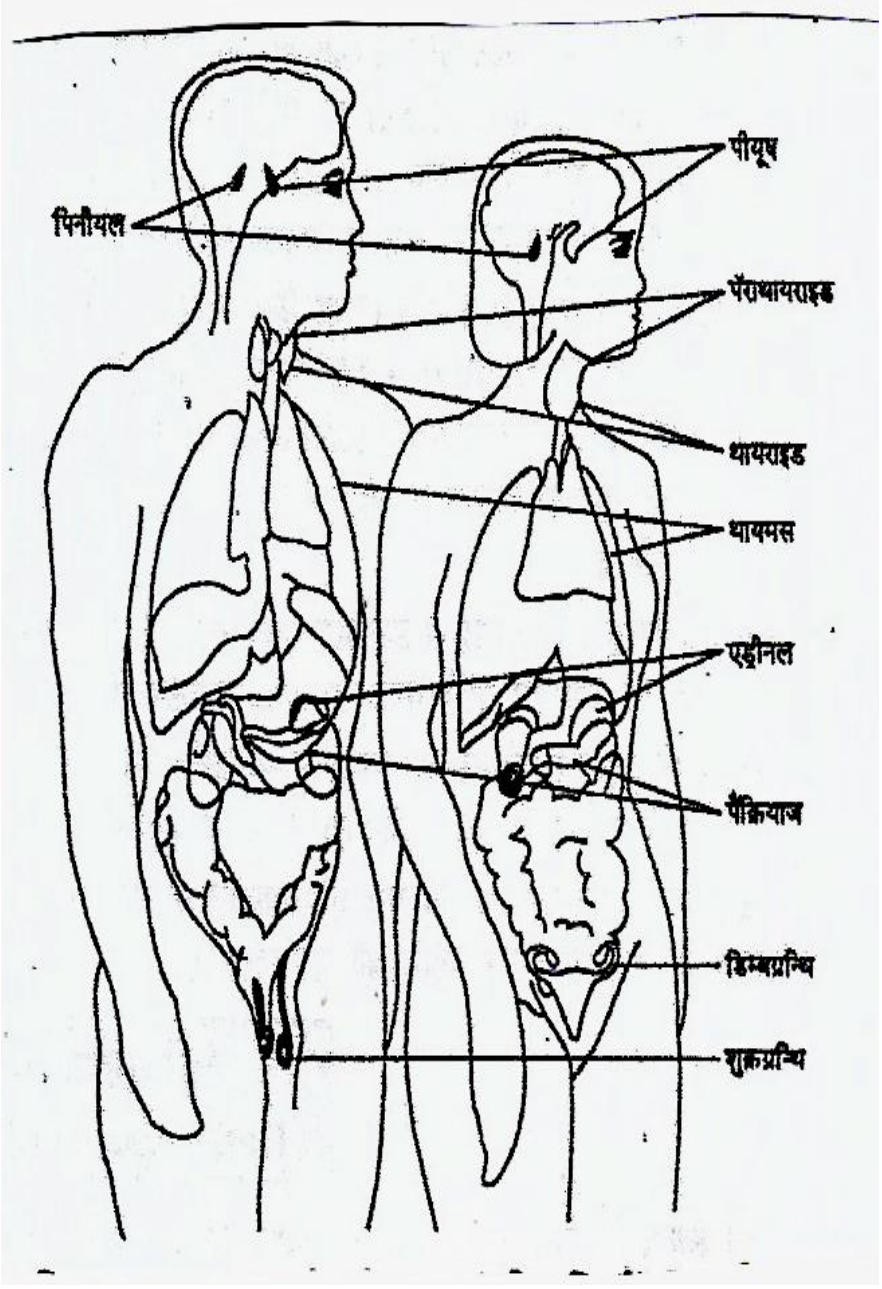
पीयूष
पिनीयल
पैराथायराइड
थायराइड
थायमस
एड्रीनल
पैंक्रियाज
डिम्बग्रन्थि
शुक्रग्रन्थि

(I) **पियूष ग्रंथि** (PITUITARY GLAND)-इस ग्रंथि का स्थान मष्तिष्क में होता है |इस ग्रंथि के अग्रवर्ती भाग से जो हारमोंस निकलता है उसमे सोमैटोट्रोपीन या वर्द्धन हारमोन भी जिसे कहा जाता है प्रमुख है |बचपन में इस हारमोंस के अधिक निकलने से व्यक्ति के शरीर की लम्बाई अधिक हो जाती है तथा इस हारमोंस की कमी होने पर व्यक्ति बौना हो जाता है |पियूष ग्रंथि के परवर्ती भाग से जो हारमोंस निकलता है उसे पिट-यूट्रीन कहा जाता है –जिसका कार्य शरीर में एक ख़ास रक्त चाप को बनाये रखना,चिकनी मांसपेशियों में सजगता तथा वृक्क को सामान्य ढंग से कार्य करने में मदद पहूँचाना आदि होता है |

पियूष ग्रंथि के अग्रवर्ती भाग में सोमैटोट्रोपीन के आलावा एक और हारमोंस निकलता है जिसे ट्रोफिक हारमोंस कहा जाता है|इस हारमोंस के सहारे पियूष ग्रंथि अन्य अन्तःश्रावी ग्रंथियों जैसे –एड्रीनल ग्रंथि,कंठ ग्रंथि तथा यौन ग्रंथि के कार्यों पर अपना नियंत्रण

रखता है| इसलिए पियूष ग्रंथि को 'मास्टर ग्रंथि'भी कहा गया है |

(II) **एड्रीनल ग्रंथि** (ADRENAL GLAND)-इस ग्रंथि का स्थान वृक्क के ऊपर होता है|इस ग्रंथि के भी दो भाग है –बाहरी भाग तथा भीतरी भाग | बाहरी भाग को एड्रीनल वल्कूट तथा भीतरी भाग को एड्रिनल मेडुला कहा जाता है |एड्रीनल वल्कुट के हारमोंस को कॉर्टिन कहा जाता है तथा इसके द्वारा कार्बोहाइड्रेट,चयापचय का नियंत्रण होता है | एड्रिनल मेडुला द्वारा दो तरह का हारमोंस निकलता है –इपाईनफ्राइन या एड्रानालीन तथा नॉरइपाईनफ्राइन या नॉरएड्रिनालिन | इन दोनों तरह के हारमोंस को एक साथ मिलाकर केटकोल हारमोंस कहा जाता है | मनोवैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह दिखला दिया है की दोनों हारमोंस में से एड्रीनालिन का महत्व अधिक है क्योंकि इसके द्वारा ही व्यक्ति की सांवेगिक स्थिति का नियंत्रण होता है | भय ,क्रोध आदि संवेग में इस हारमोंस का विशेष महत्व है |

(III) **कंठ ग्रंथि** (THYROID GLAND)-इसका स्थान शरीर के कंठ के पास होता है | इस ग्रंथि से निकलने वाले

हारमोंस को थायराक्सीन कहा जाता है जिसका प्रभाव पुरे शरीर के चयापचय प्रक्रियाओं पर पड़ता है | फलस्वरूप ,शरीर का विकास इसके द्वारा काफी प्रभावित होता है |बचपन में थायरॉक्सीन की कमी होने से बच्चों में बौनापन की स्थिति का तथा सयाना होने पर इसकी कमी होने से एक विशेष शारीरिक अवस्था जिसे माईएक्सडेमा कहा जाता है,उत्पन्न होती है |इसमें चयापचय की गति मंद हो जाती है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति के ह्रदय की गति ,श्वसन गति ,रक्तचाप ,शरीर का तापक्रम सामान्य अवस्था में कम हो जाता है |

(IV) **उपकंठ ग्रंथि** (PARATHYROID GLAND)-इस ग्रंथि का स्थान कंठ ग्रंथि के बगल में होता है और आकार में यह बहुत ही छूटा होता है जिसका वजन 0.1 ग्राम के करीब होता है | इस ग्रंथि से निकलने वाले हारमोंस को पारथोरमोन कहा जाता है जिसके द्वारा खून में कैल्शियम तथा फॉस्फेट की मात्रा का निर्धारण होता है| खून में कैल्शियम के स्तर द्वारा तंत्रिका उत्तक में होनेवाली उत्तेजनशीलता का नियंत्रण होता है| कैल्शियम अधिक होने से तंत्रिकाओं में उत्तेजनशीलता

बनी रहती है |दूसरी तरफ यदि खून में पाराथारमोन की कमी हो जाती है जिसके फलस्वरूप कैल्शियम के मात्रा में भी कमी हो जाती है ,तो इससे व्यक्ति में शिथिलता बढ़ जाती है और उसके तांत्रिका उत्तक संतोषजनक रूप से कार्य नहीं कर पाते है |

(V) **पैंक्रियास** (PANCREAS)-इस ग्रंथि का स्थान अमाशय के निचे होता है |अन्तःश्रावी ग्रंथि के रूप में इससे दो तरह के हारमोंस इनके दो विभिन्न कोशिकाओं से निकलते है |बीटा कोशिकाओं से निकलने वाले हारमोंस को इन्सुलिन तथा अल्फ़ा कोशिकाओं से निकलने वाले हारमोंस को ग्लुकागोन की संज्ञा दी जाती है | इन दोनों तरह के हारमोंस में से इन्सुलिन का महत्व अधिक है |रक्त में चीनी की मात्रा इन्सुलिन द्वारा नियंत्रित होती है |

(VI) **यौन ग्रंथि** (SEX GLAND)- महिलाओं की यौन ग्रंथि को डिम्बग्रंथि तथा पुरुष की यौन ग्रंथि को अंडग्रंथि कहा जाता है | अंडग्रंथि से निकलने वाले हारमोंस को एंड्रोजेंस कहा जाता है जिसके मुख्य दो प्रकार है –टेस्टोस्ट्रोन तथा एन्ड्रोस्ट्रोन | इनसे पुरुषो में प्राथमिक तथा गौण यौन गुण का विकास होता है

|यौवनावस्था आने पर इस हारमोंस की मात्रा में ग्रोथ हो जाती है | डिम्बग्रंथि से निकलने वाले हारमोंस को एस्ट्रोजेन्स तथा प्रोजेस्ट्रोन कहा जाता है |

(3) **स्नायु मंडल** – व्यक्तित्व के जैविक निर्धारको में स्नायु माडल का स्थान प्रमुख है |मनोवैज्ञानिको का सामान्य विचार यह है की जिन व्यक्तियों का स्नायु मंडल सबसे अधिक विकसित तथा जटिल होता है , उसकी बुद्धी अधिक होती है तथा उसमे परिस्थिति के साथ समायोजन करने की क्षमता भी अधिक होती है |ऐसे व्यक्तियों या बच्चो के प्रति समाज के अन्य लोगो की मनोवृति अनुकूल होती है और इन लोगो द्वारा उनकी प्रशंसा अधिकतर की जाती है | इसका परिणाम यह होता है की ऐसे व्यक्तियों या बच्चो में सामाजिक शीलगुण जैसे-उत्तरदायित्व ,समयनिष्ठा,सांवेगिक,स्थिरता ,आत्म-विश्वास ,अहम् शक्ति आदिका विकास तेजी से होता है |दूसरी तरफ यदि व्यक्ति का स्नायुमंडल कम विकसित होता है ,तो वैसी अवस्था में व्यक्ति कम बुद्धी का होता है तथा उसकी अभियोजन क्षमता भी काफी कम होती है |फलस्वरूप ,समाज के अन्य व्यक्ति उसे अपेक्षा एवं घृणा की नज़र से देखते है जिसका परिणाम यह होता है

की ऐसे व्यक्तियों में असामाजिक शीलगुण तथा चारित्रिक विकृति विकसित हो जाती है |अतः हम देखते है की स्नायुमंडल द्वारा भी व्यक्तित्व के शीलगुणों का विकास प्रभावित होता है |